आचार्य गुणभद्र

जीवन-परिचय : प्रतिभामूर्ति आचार्य गुणभद्र संस्कृतभाषा के श्रेष्ठ कवि हैं। ये योग्य गुरु के योग्य शिष्य हैं।

ये सेनसंघ के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम आचार्य जिनसेन द्वितीय और दादा गुरु का नाम वीरसेन है। आचार्य दशरथ गुणभद्र के विद्यागुरु थे।

आचार्य जिनसेन प्रथम या द्वितीय के समान गुणभद्र की भी साधनाभूमि कर्नाटक और महाराष्ट्र रही है। इन्हीं प्रान्तों में रहकर इन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना की है।

आचार्य गुणभद्र का समय शक संवत् 820, ई. सन् 898 अर्थात् ई. सन् की नवम शती का अन्तिम चरण सिद्ध होता है।

आचार्य गुणभद्र सिद्धान्तशास्त्र रूपी समुद्र के परगामी थे। इनकी अतिशय बुद्धि प्रखर तथा तीक्ष्ण थी, ये अनेक नय और प्रमाण के ज्ञान में निपुण, अगणित गुणों से विभूषित, समस्त जगत में प्रसिद्ध और उत्तम तप से भूषित थे। आप उत्कृष्ट ज्ञान से युक्त, पक्षोपवासी, तपस्वी तथा भावलिंगी मुनिराज थे।

रचना-परिचय : आचार्य गुणभद्र की रचनाओं में सरसता और सरलता के साथ प्रसादगुण भी समाहित है। गुणभद्र का समस्त जीवन साहित्य-साधना में ही व्यतीत हुआ। आपके द्वारा लिखित रचनाएँ निम्न हैं—

1. **आदिपुराण :** गुणभद्राचार्य ने अपने गुरु जिनसेन द्वितीय द्वारा अधूरे छोड़े आदिपुराण के 43वें पर्व के चौथे पद्य से समाप्ति पर्यन्त कुल 1620 पद्य लिखे हैं।

2. **उत्तरपुराण :** इस ग्रन्थ में अजितनाथ तीर्थंकर से लेकर महावीर पर्यन्त तेईस तीर्थंकर, ग्यारह चक्रवर्ती, नौ नारायण, नौ बलभद्र, नौ प्रतिनारायण और जीवन्धर स्वामी आदि कुछ विशिष्ट पुरुषों के चरित दिये गये हैं। कथावस्तु पर्याप्त विस्तृत है।

आचार्य जिनसेन की इच्छा महापुराण को विशाल ग्रन्थ बनाने की थी। परन्तु

वे उसे पूर्ण न कर सके। यदि गुणभद्राचार्य उत्तरपुराण को भी आदिपुराण के सदृश विस्तृत बनाते तो महापुराण एक उत्कृष्ट कोटि का महाभारत जैसा एक विशाल ग्रन्थ होता। परन्तु आयु और शरीर आदि की स्थिति देखते हुए वे बहुत से मौलिक और विस्तृत कथन नहीं कर पाये। परन्तु फिर भी उनका उत्तरपुराण अत्यन्त महान और प्रशंसनीय है।

3. **आत्मानुशासन :** इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में धर्म एवं नीति के 269 पद्य हैं। आत्मा के यथार्थ स्वरूप की शिक्षा देने के लिए इसका प्रणयन किया गया है। इस पर प्रभाचन्द्राचार्य ने संस्कृत-टीका और पण्डित टोडरमल ने हिन्दी-टीका लिखी है। यह आचार्य गुणभद्र की स्वतन्त्र कृति है।

4. **जिनदत्तचरित :** यह एक संस्कृत काव्यग्रन्थ है, जिसमें जिनदत्त का जीवन-परिचय अंकित है। यह माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला से मूल रूप में प्रकाशित हो चुका है। इस काव्य में 9 सर्ग हैं।